RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-06
June-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i06.013

विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय के ललित निबंधों में तंत्रशास्त्र

भागचन्द सैनी

रिसर्च फैलो, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

तंत्र परम्परा से जुड़े हुए आगम ग्रंथ है। तंत्र परम्परा एक हिंदू एवं बौद्ध परम्परा तो है ही, जैन धर्म, सिख धर्म, तिब्बत की बोन परम्परा, दाऊ परम्परा, तथा जापान की शित्तो परम्परा में भी पाई जाती है। भारतीय परम्परा में किसी भी व्यवस्थित ग्रंथ, सिद्धांत, विधि, उपकरण, तकनीक या कार्यप्रणाली को भी तंत्र कहते हैं।

हिंदू परम्परा में तंत्र मुख्यतः शाक्त संप्रदाय से जुड़ा हुआ है। उसके बाद शैव संप्रदाय से और कुछ सीमा तक वैष्णव परम्परा से भी। शैव परम्परा में तंत्र ग्रंथों के वक्ता साधारणतयः शिवजी होते हैं। बौद्ध धर्म का वज्र संप्रदाय अपने तंत्र संबंधी विचारों, कर्मकांडों और साहित्य के लिए प्रसिद्ध है। तंत्र का शाब्दिक उद्भव इस प्रकार माना गया है– "तनोति त्रायति तंत्र" जिससे अभिप्राय है– तनना, विस्तार, फैलाव, इस प्रकार इससे त्राण होना तंत्र है। यहाँ पर तंत्र साधना से अभिप्राय युहा या गूढ़ साधनाओं से किया जाता रहा है।

तंत्रों को वेदों के काल के बाद की रचना माना जाता है। तंत्रों में प्राचीन आख्यान, कथानक आदि का समावेश होता है। अपने विषयवस्तु की दृष्टि से यह धर्म, दर्शन, सृष्टि रचना शास्त्र, प्राचीन विज्ञान आदि के इनसाइक्लोपीडिया भी कहे जा सकते हैं। मुख्यतया तंत्र 64 माने गए हैं। तंत्र का प्रभाव विश्व स्तर तक है। इसका प्रमाण हिंदू, बौद्ध, जैन, तिब्बती आदि धर्मों की तंत्र साधना के ग्रंथ है। भारत में बंगाल, बिहार तथा राजस्थान तंत्र के गढ़ रहे हैं।

यह शास्त्र तीनों भागों में विभक्त है– आगम यामल और मुख्य तंत्र वाराही तंत्र के अनुसार जिसमें सृष्टि, प्रलय, देवताओं की पूजा, सब कार्यों की साधना, पुरश्चरण, षट्कर्म, साधन और चार प्रकार के ध्यानयोग का वर्णन हो उसे आगम कहते हैं। जिसमें सृष्टितत्व, ज्योतिष, नित्यकृत्य, क्रम, सूत्र, वर्णभेद और युगधर्म का वर्णन हो उसे यामल कहतेहैं। जिसमें सृष्टि, लट, मंत्रनिर्णय, देवताओं के संस्थान, यंत्र निर्णय, तीर्थ, आश्रम, धर्म, कल्प, ज्योतिष संस्थान, व्रत, कथा, शौच और अशौच, स्त्री–पुरुष लक्षण, राजधर्म, दान, धर्म, युगधर्म, व्यवहार तथा आध्यात्मिक विषयों का वर्णन हो वह तंत्र कहलाता है।

इस शास्त्र का सिद्धांत है, कि कलियुग में वैदिक तंत्रो, जपो और यज्ञों आदि का कोई फल नहीं होता। इस युग में सब प्रकार के कार्यों की सफलता के लिए तंत्रशास्त्र में वर्णित मंत्रों और उपायों से सहायता मिलती है। इनका पूजा विधान सबसे अलग है। चक्र पूजा तथा अन्य पूजाओं में तांत्रिक, मद्य, माँस और मत्स्य का अधिक उपयोग करते हैं।

पंडित विद्यानिवास मिश्र के संग्रह 'तुम चंदन हम पानी' में संकलित तांत्रिक कला की सांध्य भूमि निबंध तंत्रशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस निबंध में भारतीय तंत्र कला को समझाया गया है। तंत्र कला ने किन–किन रूपों में परिणति पायी। खजुराहो की कला को लेकर तंत्र के भावभिप्रायो और गूढ़ व्यंजनाओं को लेखक ने एक नवीन आयाम दिया है। वह बताते हैं कि खजुराहो की धार्मिक प्रेरणा के नीचे तंत्र का रूप है। इस निबंध में मिश्री जी लिखते हैं– "तांत्रिक कला में ही भारतीय कला ने अपनी पराकाष्ठा पायी। तांत्रिक कला ने भी अपना उत्कर्ष खजुराहो में पाया। उत्तर मध्यकाल में जिन वर्जनाओं पर बल दिया और विग्रह में ही मनुष्य की ऊर्ध्वगतिकी जो परिसमाप्ति मानी, उसमें कभी महत्व देने की चिंता ही पूर्ववर्ती विचारकों या कलाकारों को नहीं हुई, क्योंकि वह उस पूर्ण आनंद के उपासक थे, जिनकी आराधना में किसी निषेध या अपवर्जन या कुण्ठा या भय या जुगुप्सा की किसी भी वस्तु का अस्तित्व ही विलीन हो जाता है।[1]

मिश्र जी कहना चाहते हैं कि खजुराहो की मूर्तियों में कामुकता खोजना विकृत मानसिकता का द्योतक है। इन नग्न मूर्तियों में पूर्णता है, जो समस्त कुंठा और अतृप्तियों का उपशमन कर देती है। यह हमारी नैतिक दुर्बलता है कि हम इसके समग्र अर्थों से दूर रहे। पहले के कलाकार आनंद के उपासक थे आनंद की इस उपासना में जुगुत्सा, भय अथवा किसी वर्जित क्षेत्र के लिए कोई स्थान नहीं था। खजुराहो की यह कला साधना शुद्ध आनंद की खोज का परिणाम है। इसमें अतृप्त कामुकता की खोज करना बेमानी है, उस कला एवं कलाकारों का अपमान है।

तांत्रिक कला का मूल उत्स है आनंद। उनका आनंद आत्मा वाला आनंद है। वह भौतिक आनंद से निरपेक्ष है। इसी आनंद की परिणति है उनकी कला साधना। तांत्रिकों की इस मनोभूमि को रेखांकित करते हैं। मिश्र जी लिखते हैं "तांत्रिक कला भी आनंद की इस खोज की कहानी दूसरे माध्यम से दुहराती है। स्थूल कायिक आनंद की जितनी प्रकार की उत्कर्ष भूमिया हो सकती है उन सभी में सूक्ष्म अशरीरीऔर परम आनंद की अभिव्यक्ति जोडना यह तांत्रिक कलाकार का स्वप्न है।"[2]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस निबंध के माध्यम से मिश्र जी ने तंत्र शास्त्र के प्रति जो एकांगी दृष्टिकोण बना हुआ है उसको दूर करने का प्रयास किया है। भारतीय समाज में तंत्र को लेकर कई भ्रांतियां प्रचलित है। मारण–मोहन तथा वशीकरण का पर्याय इस तंत्र शास्त्र को बना दिया गया है। मिश्र जी इन सब का निषेध करते हुए उसको वही प्रतिष्ठा दिलाना चाहते हैं, जिसका वह अधिकारी है।

कला, शक्ति और शिव इनका दूसरा तंत्र विद्या से संबंधित निबंध है। इस निबंध में वे कला, शक्ति और शिव में आंतरिक संगति बैठाते हैं। इस निबंध से वे उद्घाटित करते हैं कि कला का पर्यवसान शिव में जाकर ही होता है। कला सृजन के मूल में लोक कल्याण होता है। इसी बात को तांत्रिकों ने अपने दृष्टि से कहा है। इस निबंध में मिश्र जी लिखते हैं– "इसी बात को तांत्रिकों ने और उसे शिवत्व ग्रहण करके दर्शन की स्थापना करने वाले प्रत्यभिज्ञावादियों ने उद्घोषित किया है। तांत्रिकों के मध्य में 36 तत्व होते हैं और इनमें मन, बुद्धि, अहंकार और अंतःकरण इन सबके मूल में कला शक्ति कही गई है।"[3]

तंत्र शास्त्र में भी कला को महत्व दिया गया है। कला की उपयोगिता को उन्होंने भी स्वीकार की है। मिश्र जी के इस निबंध में प्रतिपादित हुआ है कि तंत्र में भी परोक्ष रूप से कला विद्यमान है। कला जो जीवन को सुंदर बनाती है, कला जिससे जीवन सरस बनता है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप से यह कह सकते हैं कि मिश्र जी ने तंत्र शास्त्र की नकारात्मक बनी छवि को दूर करने का प्रयास किया है। उन्होंने तंत्र के मूल में आनंद और कला को बताया। इसलिए तंत्र शास्त्र से नाक, भौं सिकोड़ना ठीक नहीं।

श्री कुबेर नाथ राय ने तंत्र शास्त्र संबधी महत्वपूर्ण जानकारी का उपयोग अपने निबंधों में किया है। श्री राय ने तंत्र शास्त्र उपयोग साध्य रूप में न करके साधन रूप में किया है। विषय की गहरी समझ बनाने के लिए उन्होंने तंत्र शास्त्र का उपयोग किया है। 'चल मोरवा बारात रे' निबंध मोर संबंधी विश्वासों को लेकर लिखा गया है। मोर कहीं लोकधर्म से, तो कहीं तंत्र शास्त्र से जुड़ता है। मोर का संबंध गंधर्व और अप्सरा से भी जोड़कर देखा जाता है इस निबंध में श्री राय मोर को लेकर तंत्र संबंधी विश्वास को उजागर करते हैं। वे लिखते हैं– "मयूर भारत की लोक धर्म और तंत्र धर्म के अनेक विश्वासों से जुड़ा पक्षी है, जिसके पंख घर में रखने पर भूत प्रेत, अपदेवता और हारी बीमारी का भय कम होता है। गुणी और ओझा लोग प्रायः मयूर पुच्छो की चंवर लेकर चलते हैं। जैन तीर्थकर महावीर स्वामी भी मोरपंख लेकर चलते थे। वे महाविरागी तीर्थंकरगण संभवतः इसक अंदर निहित किसी आरोग्य या तांत्रिक शक्ति के कारण ही इसे धारण करते थे।"[4]

मोर पंख को लेकर हमारे लोक में अनेक विश्वास प्रचलित है। इन विश्वासों में सबसे ज्यादा प्रभावकारी है दुरात्माओं से तथा बीमारी से बचाव। इनके बचने से घर में सुख समृद्धि आएगी। यह लोग विश्वास इतना गहराया की महावीर स्वामी जैसी महान विभूति भी इसको धारण करती थी।

तांत्रिक ने हमारे लोकमानस पर कई गहरे प्रभाव छोड़े। यह प्रभाव असरदार है या नहीं इसमें कोई नहीं उलझा। पर सभी ने इन पर विश्वास जरूर व्यक्त किया। अपनाया नहीं, तो विरोध भी नहीं किया। ऐसा ही एक विश्वास है कि जल देवी का निराकार रूप है। यह देवी निराकार रूप में जल में विद्यमान रहती है। वह दिव्य रूप धारण करने वाली है। जलधारा उस देवी की प्रतिमा है। इस संदर्भ में तांत्रिकों की मान्यता भी इससे मिलती–जुलती है। श्री राय ने नदी पतितपावनीः नदी मत्स्यगंधा निबंध में लिखा है– "यो तांत्रिकों ने माना है– मकर पर कमल, कमल पर देवी, मकर मनुष्य का तमोगुणी मन है, तो जो निरंतर दिव्य जल के परिवेश में रहते–रहते सुंदर और श्री का वाहन बनने की योग्यता प्राप्त कर लेता है।"[5]

जीवन में धारक पात्र की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, अगर वह सत्य और मांगलिक भूमिका में रहेगा तो उसका प्रभाव निश्चित रूप से खल पात्र पर पड़ेगा। खल पात्र कुछ अंशों में ही सही, अपने स्वरूप में परिवर्तन करेगा। वह तम से सत की और अग्रसर होगा। मगर के साथ भी ऐसा ही है। मगर जल के सान्निध्य में रहता है जल उसे सच की राह पकड़ाता है परिणामस्वरूप वह श्री का वाहन बनने की योग्यता प्राप्त कर लेता है।

उत्तर गुरु और कदली वन नामक निबंध में भी तंत्र शास्त्र से संबंधित प्रसंग आया है। इसमें योगिनी तंत्र की एक कथा आयी है। योगिनी साधना में माँ आदि शक्ति को प्रसन्न करने के लिए साधना की जाती है। माँ काली अपनी योगिनियों के माध्यम से अपने भक्तों का कल्याण करती है। इस कथा का उल्लेख श्री राय ने इस प्रकार किया है– "योगिनी तंत्र के अनुसार नरकासुर मिथिला के राजा जनक को शिशु के रूप में एक जंगल (नर–कपाल) मैं मिला। इस मिथ का एक रचनात्मक अर्थ यह हो सकता है कि नरकासुर मिथिला के आर्य समाज और अंग देश कि किसी आर्यितर कुल कन्या या गण स्वामिनी के प्रणय की संतान था। उसे दैवी आदेश हुआ की योनि पीठ कामरूप में जाकर वह अपना राज्य स्थापित करे।"[6]

योगिनी तंत्र में काली माँ सर्वोपरि है, इसमें नारी शक्ति अथवा महाशक्ति की उपासना की जाती है। योगिनी तंत्र का सरोकार कामरूप प्रदेश से रहा है। इस कामरूप प्रदेश में कामाख्या मंदिर बना हुआ है जो तंत्र सिद्धि का सर्वोच्च स्थल है।

'संस्कृति का शेषनाग' निबंध में श्री राय ने भगवती के पूज्य पदार्थ की तांत्रिक दृष्टि से व्याख्या की है। इस निबंध में बात शुरू होती है खीर–पूरी को लेकर। इस खीर–पुरी की भोजपुरी चर्चा होते होते तांत्रिक दृष्टि तक पहुंच जाती है। जिसे सारा देश पूरी कहता है उसे भोजपुरी लोग पूड़ी कहते

हैं और उसकी पूरी है दाल–पूरी, जिसे पूरन भरकर पूरा किया जा सके वह है पूरी, और पूरी में रहती है नमक, हींग आदि से सुगंधित चने की दाल। इस निबंध में इस पूरन और पूरी के संबंधों को तंत्र शास्त्र की दृष्टि से समझाया गया है।

"तंत्र शास्त्र में पूर्णम् कहते हैं। 'अ' से 'ह' तक चलने वाली 52 अक्षरों की वर्णमाला को काशी वले इसे सिद्ध मातृका कहते हैं। यानी अपना चिरपरिचित क,ख,ग,घ पूर्णम है अर्थात वर्णमाला है। वर्णमालिनी भगवती को कहते हैं। यह वर्णमाला अपने अक्षर रूप में निराकार निर्गुण भगवती का प्रतीक है। शब्द के भीतर बैठकर ही यह सगुण रूप लेती है। अतः पूर्णम् भी निराकार पराशक्ति का प्रतीक है। अतः उसके ऊपर आटे का कवच चढाया जाता है। जो माया कवच है। अब इस कवच को धारण करके वह निराकार पराशक्ति रूप और स्वाद की विशिष्टता ग्रहण करती है।[7]"

जिस प्रकार अक्षर को पूर्णता मिलती है शब्द में ढलने से। नमक, हल्दी, हींग को पूर्णता मिलती है आटे का कवच चढ़ने पर। अक्षर और नमक, हल्दी, हींग अर्थहीन लगते हैं। देवी की आराधना भी शब्द और पूरी के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। शब्द से देवी तक अपनी बात पहुंचाई जाती है, तो पूरी से उसे निषेध किया जाता है जिससे वह भगवती प्रसन्न हो सके।

पंडित विद्यानिवास मिश्र ने तंत्र शास्त्र को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है। उन्होंने तंत्र के एकांगी दृष्टिकोण का निषेध किया तथा उसे आनंद के समरूप बनाया है। जबकि श्री राय ने तंत्र संबंधी लोक मान्यताओं को अपने निबंधों में व्याख्यायित किया है। मिश्र जी ने तंत्र शास्त्र की अवधारणा को सामने रखा है तो श्री राय ने इस अवधारणा के क्रियात्मक पक्ष को अभिव्यक्त किया है। दोनों ने ही तंत्र शास्त्र को सकारात्मक अर्थ में लिया है। श्री राय ने तांत्रिक मान्यताओं को विस्तार से समझाया है। इस संदर्भ में उन्होंने कामरूप प्रदेश और कामाख्या मंदिर को तांत्रिको का केन्द्र माना है।

संदर्भ सूची

1. विद्यानिवास मिश्र : तुम चन्दन हम पानी, मयूर पेपरबैक्स, पृ.सं. 34
2. वहीं, पृ.सं. 35
3. वहीं, पृ.सं. 24
4. कुबेरनाथ राय : उत्तरकुरु, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृ.सं. 36
5. वहीं, पृ.सं. 43
6. वहीं, पृ.सं. 2–3
7. कुबेरनाथ राय : मराल, भारती प्रकाशन, 1993, पृ.सं. 102–103

RRIJM 2015, All Rights Reserved